Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July 2024 5(7SE), 243–245

LEADERSHIP, ETHICS AND ACCOUNTABILITY IN GOVERNANCE

शासन में नेतृत्व, नैतिकता और उत्तरदायित्व

Tejaswini Ganapatrao Kulkarni [1]

[1] Vai. Dhunda Maharaj Deglaurkar College, Deglaur, India

https://crossmark.crossref.org/dialog/?doi=10.29121/shodhkosh.v5.i7se.2024.5889&domain=pdf&date_stamp=2024-07-31

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i7SE.2024.5889

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Prajasukhe Sukh Rajna: Prajanan tu hite hitam.
Natmapriya hitam Rajna: Prajanan tu priyaam hitam (1) The happiness of the king lies in the happiness of the people, he should show his interest in the interests of the people. The interest of the king is not in what is dear to himself, his interest is in what is dear to the people. Kautilya's Arthasastra is an excellent book on the subject of leadership ethics and responsibility in governance. The soul of the state resides in leadership. This is true. Therefore, effective and practical leadership is an essential requirement in statecraft. Acharya (Chanakya) Kautilya's great The text 'Artha Shastra' is a book which deals mainly with economic administration. Kautilya's Arthashastra, an ancient Indian political treatise, provides a comprehensive guide to governance, economics and the art of governance. Its major theories revolve around leadership, law and economy.

Hindi: प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां तु हिते हितम् ।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम् ॥ (1)
प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है, प्रजा के हित में ही उसे अपना हित दिखना चाहिए । जो स्वयं को प्रिय लगे उसमें राजा का हित नहीं है, उसका हित तो प्रजा को जो प्रिय लगे उसमें है ।शासन में नेतृत्वनैतिकताऔर उत्तरदायित्वइस विषय परकौटिल्यकाअर्थशास्त्रएक बेहतरीन उत्तमग्रंथसंपदाहैयेबातमाननीपड़ेगी।राज्यकाआत्मा नेतृत्वमेंबसताहैयहसत्यहीहै।इसकारणप्रभावीऔरव्यावहारिक नेतृत्व यह राज्यकलामेंएक अनिवार्य आवश्यकताहै।आचार्य (चाणक्य)कौटिल्य इनका महान ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' यहएक ग्रंथहै जो प्रमुख रूपसे आर्थिक प्रशासनसे संबंधित है।कौटिल्य का अर्थशास्त्र, एक प्राचीन भारतीय राजनीतिक ग्रंथ है, जो शासन, अर्थशास्त्र और शासन कला के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका प्रदान करता है। इसके प्रमुख सिद्धांत नेतृत्व, कानून और अर्थव्यवस्था के इर्द-गिर्द घूमते हैं।।

1. प्रस्तावना

प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां तु हिते हितम् ।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम् ॥ (1)

प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है, प्रजा के हित में ही उसे अपना हित दिखना चाहिए । जो स्वयं को प्रिय लगे उसमें राजा का हित नहीं है, उसका हित तो प्रजा को जो प्रिय लगे उसमें है ।शासन में नेतृत्वनैतिकताऔर उत्तरदायित्वइस विषय परकौटिल्यकाअर्थशास्त्रएक बेहतरीन उत्तमग्रंथसंपदाहैयेबातमाननीपड़ेगी।राज्यकाआत्मा नेतृत्वमेंबसताहैयहसत्यहीहै।इसकारणप्रभावीऔरव्यावहारिक नेतृत्व यह राज्यकलामेंएक अनिवार्य आवश्यकताहै।आचार्य (चाणक्य)कौटिल्य इनका महान ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' यहएक ग्रंथहै जो प्रमुख रूपसे आर्थिक प्रशासनसे संबंधित है।कौटिल्य का अर्थशास्त्र, एक प्राचीन भारतीय राजनीतिक ग्रंथ है, जो शासन, अर्थशास्त्र और शासन कला के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका प्रदान करता है। इसके प्रमुख सिद्धांत नेतृत्व, कानून और अर्थव्यवस्था के इर्द-गिर्द घूमते हैं।

अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, कौटिल्य समृद्धि और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए आर्थिक गतिविधियों को विनियमित करने में राज्य की भूमिका पर जोर देते हैं। वे राज्य के लिए राजस्व उत्पन्न करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में कराधान, व्यापार और उद्योग के महत्व पर चर्चा करते हैं। कौटिल्य कृषि, विनिर्माण और वाणिज्य को प्रोत्साहित करने के लिए नीतियों का सुझाव देते हैं, साथ ही अत्यधिक कराधान के खिलाफ चेतावनी देते हैं जो लोगों पर बोझ डाल सकता है।कातिल्य का अर्थशास्त्र प्राचीन विश्व की सबसे महान राजनीतिक पुस्तकों में से एक था। मैक्स वेबर ने इसे मान्यता दी। वेबर ने अपने प्रसिद्ध व्याख्यान "राजनीति एक व्यवसाय के रूप में" में कहा, "वास्तव में कट्टरपंथी 'मैकियावेलियनवाद', उस शब्द के लोकप्रिय अर्थ में, भारतीय साहित्य में कौटिल्य के अर्थशास्त्र (ईसा मसीह के जन्म से बहुत पहले, जाहिरा तौर पर चंद्रगुप्त [मौर्य] के समय में लिखा गया) में शास्त्रीय रूप से व्यक्त किया गया है।

कौटिल्य और उनका "राजनीति विज्ञान" : - आर.पी. कांगले ने अर्थशास्त्र शब्द का अनुवाद "राजनीति का विज्ञान" के रूप में किया है, जो "पृथ्वी के अधिग्रहण और संरक्षण" में राजा की सहायता करने के लिए लिखा गया एक ग्रंथ है। अन्य लोग अर्थशास्त्र का अनुवाद थोड़े अलग तरीके से करते हैं: ए.एल. बाशम कहते हैं कि यह "राजनीति पर एक ग्रंथ" है, कोसंबी ने इसे "भौतिक लाभ का विज्ञान" कहते हुए शब्द के आर्थिक महत्व पर जोर दिया है, और जी.पी. सिंह ने इसे "राजनीति का विज्ञान" कहा है। मैं अर्थशास्त्र का अनुवाद "राजनीतिक अर्थव्यवस्था का विज्ञान" के रूप में करना पसंद करता हूँ , लेकिन कोई भी इस शब्द का अनुवाद करे, कौटिल्य ने दावा किया है कि वे वही प्रस्तुत कर रहे हैं जिसे हेनरिक जिमर ने सही रूप से "राजनीति, अर्थव्यवस्था, कूटनीति और युद्ध के शाश्वत नियम" कहा है। (2)

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की दुनिया में, यह केवल "स्वाभाविक" है कि राष्ट्र "विरोध और बल" के माध्यम से एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं। 43 एक राजनीतिक यथार्थवादी आमतौर पर तर्क देता है कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में हमेशा संघर्ष होगा और, वास्तव में, सबसे मजबूत द्वारा शासन किया जाएगा।एक राजनीतिक यथार्थवादी के रूप में, कौटिल्य ने माना कि प्रत्येक राष्ट्र शक्ति और स्वार्थ को अधिकतम करने के लिए कार्य करता है, और इसलिए नैतिक सिद्धांतों या दायित्वों का राष्ट्रों के बीच कार्यों में बहुत कम या कोई बल नहीं होता है। जबकि सहयोगी होना अच्छा है, गठबंधन केवल तब तक चलेगा जब तक वह उस सहयोगी के साथ-साथ स्वयं के स्वार्थ में हो, क्योंकि "एक सहयोगी आपदाओं की एक साथ होने की स्थिति में और दुश्मन की शक्ति के बढ़ने की स्थिति में अपने हितों की सुरक्षा की ओर देखता है।"

कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजस्व सृजन, लागत नियंत्रण और जोखिम प्रबंधन सहित वित्तीय प्रबंधन पर मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह व्यवसाय के नेताओं के लिए लाभप्रदता और स्थिरता के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर देता है। उदाहरण के लिए, कौटिल्य व्यवसाय के नेताओं को आय के एकल स्रोत पर निर्भरता कम करने के लिए अपने राजस्व स्रोतों में विविधता लाने की सलाह देते हैं।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र नैतिक आचरण और कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के महत्व पर जोर देता है। यह व्यवसाय के नेताओं को समाज और पर्यावरण पर उनके कार्यों के प्रभाव पर विचार करने की सलाह देता है। उदाहरण के लिए, कौटिल्य सुझाव देते हैं कि व्यवसायों को परोपकारी गतिविधियों में शामिल होना चाहिए और समुदाय के कल्याण में योगदान देना चाहिए।कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजनीति से जुड़े कुछ श्लोक ये रहे: -

1) मनुष्याणां वृतिरर्थः अर्थात् मनुष्यों की जीविका को 'अर्थ' कहते हैं। (3)
2) तस्या पृथिव्या लाभपालनोपायः शास्त्रमर्थ-शास्त्रमिति अर्थात् मनुष्यों से युक्त भूमि को प्राप्त करने और उसकी रक्षा करने वाले उपायों का निरूपण करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र कहलाता है। (4)
3) तस्मान्नित्योत्थितो राजा कुर्यादर्थानुशासनम् ।

अर्थस्य मूलमुत्थानमनर्थस्य विपर्ययः ।।

{तस्मात् नित्य-उत्थितः राजा अर्थ-अनुशासनम् कुर्यात्, उत्थानम् अर्थस्य मूलम्, विपर्ययः (च) अनर्थस्य (कारणम्) ।}

अतः उक्त बातों के मद्देनजर राजा को चाहिए कि वह प्रतिदिन उन्नतिशील-उद्यमशील होकर शासन-प्रशासन एवं व्यवहार के दैनिक कार्यव्यापार संपन्न करे । अर्थ यानी संपदा-संपन्नता के मूल में उद्योग में संलग्नता ही है, इसके विपरीत लापरवाही, आलस्य, श्रम का अभाव आदि अनर्थ (संपन्नता के अभाव या हानि) के कारण बनते हैं ।

2. सारांश

कौटिल्यअर्थशास्त्रहर रूपमें एकबेहतरीनग्रंथहैं जोमानवकीउन्नतीकोबढावादेताहैं।यह हरपैलूपर नजरडाव्या हैं, राजनीतीके हरपैलूकोदरशाताहैं।संपूर्णअधिकारणो में राजनीती , शासनमें नेतृत्वनैतिकताऔरउत्तरदायित्वआदीविषयों पर प्रकाशडालाहै।राजा यानी शासक का कर्तव्य है कि वह लोगों को अनुशासित रखे और कार्यसंस्कृति को प्रेरित करे । अनुशासन एवं कार्यसंस्कृति के अभाव में आर्थिक प्रगति संभव नहीं है । जिस समाज में लोग लापरवाह बने रहें, कार्य करने से बचते हों, समय का मूल्य न समझते हों, और शासन चलाने वाले अपने हित साधने में लगे रहें, वहां संपन्नता पाना संभव नहीं यह आचार्य कौटिल्य का संदेश है ।

सदर्भसूची

कौटिल्यअर्थशास्त्र विनायाधिकरण
धर्मसूत्रकाइतिहासकंगले.
JS Rajput (2012), Seven Social Sins: The Contemporary Relevance, Allied, ISBN 978-8184247985, pages 28-29
कौटिल्यअर्थशास्त्र अधिकरणचार.